Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हिन्दी के महिला लेखन में चेतना के स्वर : एक अध्ययन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VII, Issue No. XIV, April-2014, ISSN 2230-7540

हिन्दी के महिला लेखन में चेतना के स्वर : एक अध्ययन

Pooja Rani

Ma (Hindi), B.Ed. & Net Qualified, Nissing, Distt. Karnal, (Haryana), India – 132001

----------X----------

वैश्वीकरण ने नारी चेतना के क्षितिज को सबसे ज्यादा फैलाया है। विज्ञान, तकनीक, खेल, कॉरपोरेट जगत आदि कई क्षेत्रों में स्त्रियों में अपनी मेधा और श्रम द्वारा पहचान बनाई है। भारत की बेटियों ने घर के आंगन को व्यापक कर मन का आकाश बना लिया है। आज कोई बी.बी.सी. प्रमुख है तो तो कोई देश में और विश्व के सभी देशों में आधुनिक व्यवसायगत उल्लेखनीय कार्य कर दिखा रही हैं और सर्वोच्च पद–प्रतिष्ठा भी पा रही हैं। नारी की दृष्टि से भी इसे सकारात्मक शक्ति–प्रदायक विकास के रूप में देखा जा रहा है। एक तरह से यह कहना कि 'पिछले पन्ने की औरतें समाज के अगले पन्ने पर जगह पा गई हैं, ज्यादा सार्थक होगा।

पुरूष भोगे और स्त्री भुगते–यह इस दशक की स्त्री को मान्य नहीं है। वह अब बंधनों के विरोध में खड़ी हो गई है। मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' में स्मिता और अमिता की बातचीत नारी के बदलते तेवर को व्यक्त करती है, ''मुझे यह पुरातन औरतनुमा छलप्रपंच पसन्द नहीं। दो टूक बात कहने का साहस हो तो मुझ से दोस्ती करना वरना अपना रास्ता माप''– यहा स्पष्ट रूप से लेखिका ने व्यक्त किया है कि स्त्री का शरीर उसकी अपनी मिल्कियत है। उसकी देह पर उसका अधिकार है। वह चाहेगी, तभी पुरुष उसका उपभोग कर सकता है। नासिरा शर्मा की 'शाल्मली' एक स्थान पर कहती है ''मैं पुरुष विरोधी न होकर अत्याचार विरोधी हूँ। मेरी नज़र में नारी मुक्ति और स्वतंत्रता समाज की सोच, स्त्री की स्थिति को बदलने में है।'' यह संघर्षशील नारी, बदल गई स्थितियों में पुराने मूल्यों की पड़ताल करती है। स्वतंत्रता के बाद जब नारी अस्मिता के स्वर तेजी से उभरे तो नारी जीवन को नया आयाम मिला। इस दौर की लेखिकाओं में निरुपमा सेवती, मंजुला भगत, सूर्यबाला, नीलिमासिंह, मृणालपाण्डे आदि उल्लेखनीय हैं जिनकी रचनाओं में पारंपरिक ढाँचा टूटता नज़र आया। आत्माभिव्यक्ति के साथ नारी जीवन की विभिन्न स्थितियों का वर्णन उनके लेखन में मिलता है।

प्रभा खेतान का 'छिन्नमस्ता' इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। चित्रा मुद्गल के शब्दों में ''नारी चेतना की मुहिम स्वयं स्त्री के लिए अपने अस्तित्व को मानवीय रूप में अनुभव करने और करवाने का आन्दोलन है कि मैं भी मनुष्य हूँ और अन्य मनुष्यों की तरह समाज में सम्मानपूर्वक रहने की अधिकारी हूँ।'' उनका 'आवा' उपन्यास स्त्री चेतना को अभिव्यक्ति देता समय से मुठभेड़ की पड़ताल है। मैत्रेयी पुष्पा की 'फैसला' कहानी स्त्री का वह तेवर और पहचान है जो पुरूष वर्चस्व के आतंक तले कभी अभिव्यक्ति नहीं पा सका, लेकिन अब उभर रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति में विज्ञापन की चकाचौंध में नारी स्वतंत्र हुई या उसकी पहचान का संकट पैदा हो गया है ? जैसे प्रश्न आज उठाए जा रहे है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के इस देश में आने के बाद से विज्ञापनों, फिल्मों– टी.वी. आदि पर स्त्री देह का खुलापन अधिक बढ़ गया है।

आज नारी अपनी 'ग्लास इमेज' को तोड़कर 'पावर वूमेन' बनती जा रही है। इस पितृसत्तात्मक समाज में स्वयं स्त्री अपने को पुरुष की नजर से देखने को मजबूर है। जो पुरुष करता था वही, वह भी कर रही है। कुआरे मातृत्व, गर्भपात, यौनशुचिता आदि प्रश्न समाज को उद्वेलित कर रहे है। इन विषयों पर महिला लेखिकाओं ने बदलते समय के अनुकूल चुनौती दी है। कुसुम अंसल की 'मोहरे', जंगल, सुधा अरोड़ा का 'यह रास्ता जंगल को जाता है', चन्द्रकांता का 'अंतिम साक्ष्य', मीरां सीकरी का 'गलती कहा', कमल कुमार का 'हमबरगट', मेहरून्निसा परवेज़ का 'अकेला पलाश' इसके बाद की पीढ़ी में कात्यायनी, लवलीन, अलका सरावगी, क्षमा शर्मा, जया जादवानी आदि की रचनाए समाज–परिवर्तन का दिशा–संकेत करतीं अपना महत्त्व रखती हैं।

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा की मानसिकता के विरुद्ध रचे गये कथा, पात्र, संवाद क्या वास्तविकता में आधुनिकता के मिथक हैं? क्या हम अपनी वैवाहिकी संस्थाओं के संस्कारों को ही आधुनिकीकरण के मुखौटे में छिपाकर अपने आपको ही धोखा तो नहीं दे रहे है? विवाह, परिवार, दाम्पत्य, मातृत्व सब पर जैसे प्रश्नचिह्न लग गए हैं।

'स्वतंन्त्रता' स्त्री–विमर्श में चर्चा का प्रिय और जरूरी विषय रहा है। यहा फिर से यह सवाल उठता है कि 'स्वतन्त्रता' को हम स्त्री के सन्दर्भ में किस प्रकार परिभाषित करेंगे? 'आवश्यकता स्वतन्त्रता की है। सामाजिक या राजनीतिक स्वतन्त्रता की नहीं, बल्कि दैहिक और मानसिक स्वतन्त्रता की है। स्वतन्त्रता चाहिए उस रूढ़िवादी समाज के बन्धनों से जो स्त्री के भीतर की विद्रोही आवाज सुनने से ही इनकार करता है। स्वतन्त्रता चाहिए सामाजिक सोच की, उस मानसिक बानक से ही जो स्त्री के समूचे अस्तित्व को ही फसाये रखता है। स्त्री का मन विद्रोह कर उठता है और वह सदियों पुराने रिवाजों और परम्पराओं को पीछे छोड़ देती है, लेकिन स्त्री अभी भी अपने ही खोल से, वफादारी और पारम्परिक स्त्रीत्व की कैद से बाहर नहीं निकल पायी है। उस दिन की हम उत्सुकता से प्रतीक्षा करेंगे जब कविता, स्त्रीत्व और स्वतन्त्रता साथ–साथ चलते रहकर समाज का तीसरा नेत्र खोल देंगे।''

सच तो यह है कि आज तक हम राजनीतिक–सामाजिक स्वतन्त्रता की ही व्याख्या नहीं कर सके हैं और स्त्री स्वतन्त्रता की बात उसी परिप्रेक्ष्य में की जा सकती है। निरपेक्ष स्वतन्त्रता जैसी कोई चीज नहीं हो सकती। स्वतन्त्रता का मूल अभिप्राय है

www.ignited.in

'निर्णय की स्वतन्त्रता' और स्त्री–स्वतन्त्रता का रूप क्या होगा, यह स्वयं स्त्रियों को ही तय करना है, यह निर्णय कुछ 'विशिष्ट' महिलाओं द्वारा नहीं लिया जा सकता है।

मूलभूत समस्याओं को दकियानूसी मानकर, फैशनीय सोच के प्रभाव से बाहरी समस्याओं से जूझते रहना कहीं पलायनवादी प्रवृत्ति तो नहीं ? धर्म, परम्परा, संस्कार–संस्कृति को चुनौती देने वाली मानसिकता का आह्वान अगर आधुनिक है तो फिर क्यूं आज के इक्कीसवीं सदी में भारतीय समाज में महिला की स्थिति में अंतर नहीं हो सका ?लगभग दो दशकों से कन्या भ्रूण परीक्षण की सुविधा के दुरूपयोग ने आज महिला की समाज में वास्तविक स्थिति को दिखाते हुए गंभीर प्राकृतिक असंतुलन को निर्मित कर दिया है। लेखन के सामने उभरता प्रश्न यहा समाज की पुत्र कामना की मानसिकता को झकझोरने का है। वस्तुस्थिति को सामने रखकर बेटी की उज्ज्वल संभावनाओं को खोलने का है। अर्थात् समाज में गहराई तक व्याप्त पुरूष प्रधानता के विचार को गहराइयों में जाकर क्रमशः मिटाना है। इस दिशा में मृणाल पाण्डे, कृष्णा सोबती, सूर्यबाला, मन्नू भण्डारी, चित्रा मृद्गल, ममता कालिया, मेहरून्निसा परवेज, उषा प्रियवंदा, मैत्रेयी पुष्पा, मृदुला गर्ग, अनामिका, अलका सरावगी, प्रभा खेतान आदि प्रमुख प्रतिबद्ध महिला रचनाकारों ने लिखा है। इनके सृजन सरोकार, स्थापित संस्कारों की मानसिकता को जहा चुनौती देते हैं, वहीं उसी तीव्रता से भविष्य की संभावित राहों की ओर भी इशारा करते हैं।

वर्तमान परिस्थितियों में महिला लेखन के लिए आवश्यक हो गया है कि आधुनिकता के नाम पर महिमामण्डित मूल्यों को नकार कर जमीनी हकीकत को आकार दें ताकि उसमें स्त्री प्रगति की संकल्पनाएँ, संभावनाएँ रचती–बसती चली जाए। परम्परा और आधुनिकता ने औरतों को जो जगह दी है उसमें अन्तर इतना है कि परम्परा में न औरतें दीखतीं थी, न उनकी पीड़ा। परम्परा में पीड़ा भोगने में ही बड़प्पन का अहसास कराया गया। आधुनिकता में यह पीड़ा नहीं है, भ्रम है– अपने मन का कर पाने का। आधुनिकता में महिलाओं को पहले से थोड़ी ज्यादा जगह जरूर मिली है परन्तु वे उपेक्षा और अन्याय की भी ज्यादा शिकार हो रही हैं। फिर भी वे अपनी–अपनी परिस्थिति और सामर्थ्य के हिसाब से लड़ रही हैं। जिन विद्रोह और संघर्ष की परम्परा को हाशिये पर डाल दिया था, अतीत के उन्हीं औजारों से आज की महिलाएं लेखन कर रही हैं।

नासिरा शर्मा के अनुसार इस सदी की औरत की आवाज बराबरी की माग और इंसान की तरह जीने की स्वतंत्रता के लिए जितनी भी मुखर हुई हो, तो भी अंतरध्वनि इस स्वर की बड़े गहरे रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज करती है कि इस विकास की दौड़ में, स्वतंत्रता की इस ललक में नैतिकता का मापदंड क्या होगा और इसको लेकर चलने वाली महिलाओं को जड़ एवं रूढ़िवादी कहने वाले छद्म बुद्धिजीवियों एवं नारी समर्थकों को अपने आचरण से बताना पड़ेगा कि वास्तविक प्रगतिशीलता किसको कहते हैं, उनका अर्थ पतन नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों की गरिमा है, जो रिश्तों की तिजारत से अलग एक ठोस जमीन देती है और यही इस शताब्दी की औरत की आवाज होनी चाहिए।

इस प्रकार एक ओर महिला लेखन ने वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते सामाजिक मूल्यों और उसके विघटन को रेखांकित किया है तो दूसरी ओर उसका सकारात्मक रूप भी सशक्त रूप से उभर कर आया है। इस तरह महिला लेखन बिना किसी खाचें में बंधे अबाधगति से, समय के तेवर की चुनौती को स्वीकार करते हुए, भविष्य की ओर अग्रसर है। सांस्कृतिक विघटन से प्रभावित मानव–मूल्यों को सुरक्षित रखने और संजोने–सवारने का दायित्व भी महिला रचनाकार के लिए एक चुनौती है, जिसे उसने समझा है।

सन्दर्भ :

1. प्रभा खेतान : छिन्नमस्ता।
2. मृदुला गर्ग : कठगुलाब।
3. नासिरा शर्मा : शाल्मली।
4. चित्रा मुद्गल : आवां।
5. जर्मेन गीयर : बधिया स्त्री।
6. नासिरा शर्मा : औरत के लिए औरत।
7. मैत्रेयी पुष्पा : खुली खिड़कियां।
8. अनामिका : मन मांझने की जरूरत।
9. मृदुला सिन्हा : मात्र देह नहीं है औरत।
10. मृणाल पाण्डे : परिधि पर स्त्री।